

সম্পূর্ণ মহালক্ষ্মী চালাসা

॥ দোহা ॥

মাতু লক্ষ্মী করি কৃপা, করো হৃদয় মৈঁ বাস।
মনোকামনা সিদ্ধ করি, পুরবহু মেরী আস । ।

॥ সোরঠা ॥

য়হী মোর অরদাস, হাত জোড় বিনতী করু।
সববিধি করৌ সুবাস, জয় জননি জগদম্বিকা ॥

॥ চৌপাই ॥

সিন্ধু সূতা মেথঁ সুমিরো তোহী।
জ্ঞান বুদ্ধি বিদ্যা দে মোহী ॥
তুম সমান নহী কোই উপকারী।
সব বিধি পুরবহু আস হমারী ॥
জয় জয় জয় জননী জগদম্বা।
সবকী তুম হী হো অবলম্বা ॥
তুম হো সব ঘট ঘট কে বাসী।
বিনতী যহী হমারী খাসী ॥
জগ জননী জয় সিন্ধুকুমারী।
দীনন কী তুম হো হিতকারী ॥
বিনবোঁ নিত্য তুমহি মহারানী।
কৃপা করো জগ জননি ভবানী ॥
কেহি বিধি স্তুতি করোঁ তিহারী।
সুধি লীজৈ অপরাধ বিসারী ॥
কৃপা দৃষ্টি চিতবো মম ওরী।
জগ জননী বিনতী সুন মোরী ॥
জ্ঞান বুদ্ধি সব সুখ কা দাতা।
সংকট হরো হমারী মাতা ॥
ক্ষীর সিন্ধু জব বিষ্ণু মথায়ো।
চৌদহ রত্ন সিন্ধু মৈঁ পায়ো ॥
চৌদহ রত্ন মৈঁ তুম সুখরাসী।
সেবা কিয়ো প্রভু বনদাসী ॥
জো জো জন্ম প্রভু জহাঁ লীনা।
রূপ বদল তহঁ সেবা কীনহা ॥
স্বয়ঁ বিষ্ণু জব নরতনু ধারা।
লীনহেউ অবধপুরী অবতারা ॥
তব তুম প্রগট জনকপুর মাহী।
সেবা কিয়ো হৃদয় পুলকাহী ॥
অপনায়ো তোহি অন্তর্যামী।
বিশ্ব বিদিত ত্রিভুবন কে স্বামী ॥
তুম সম প্রবল শক্তি নহঁ আনি।
কল্ল লোঁ মহিমা কহোঁ বখানী ॥
মন ক্রম বচন করে সেবকাই।
মন ইচ্ছিত বাঁছিত ফল পাই ॥
তজি ছল কপট ঔর চতুরাই।
পূজহি বিবিধ মনলাই ॥
ঔর হাল ম্যাঁ কহোঁ বুঝাই।
জো যহ পাঠ করৌ মন লাই ॥
তাকো কোই কষ্ট ন হোই।
মন ইচ্ছিত পাবে ফল সোই ॥
ত্রাহি ত্রাহি জয় দুখ নিবারিণী।
তাপভব বন্ধন হারিণী ॥
জো যহ পঢ়ে ঔর পঢ়াবে।

ধ্যান লগাকর সুনৈ সনাবৈ।।
তাকো কোই না রোগ সতাবে।
পুত্র আদি ধন সুস্পত্তি পাবে।।
পুত্রহীন অরু সম্পত্তিহীনা।
অন্ধ বধির কোটা অতি দীনা।।
বিপ্র बोलाय के पाठ करावे।
शंका दिल में कभी ना लावै।।
पाठ करावै दिन चलीसा।
तापर कृपा कै गौरीसा।।
सुख सम्पत्ति बहत सो पावै।
कर्मि नही काल की आवै ।।
बारह मास करे सो पूजा।
तेहि सम धन्य गुर नहि दूजा।।
प्रतिदिन पाठ करे मनमाही।
उन सम कोई जग में कल नही।।
बहुविधि क्या माँ करौं बड़ाई।
लेय परीक्षा ध्यान लगाई।।
करि विश्वास करे ब्रत नेमा।
होय सिद्ध उपजे उर प्रेमा।।
जय जय जय लक्ष्मी भवानी।
सब में व्यापित हो गुणखानी।।
तुमहारो तेज प्रबल जग माही।
तुम समकोउ दयालु कल नही।।
मोहि अनाथ की सुध अब लीजे।
संकट कांति भक्ति मोहि दीजे।।
भूल चूक करि क्षमा हमारी।
दर्शन दीजे दशा निहारी।।
केह प्रकार माँग करौं बड़ाई।
ज्ञान बुद्धि मोहि नहि अधिकाई।।
बिन दर्शन व्याकुल अधिकारी।
तुमहि अछत दुख सहते भारी।।
नहि मोहि ज्ञान बुद्धि ह्याय मम में।
सब जानत हो अपने मन में।।
रूप चतुर्भुज करके धारण।
कष्ट मोर अब करल निवारण।।

॥ दोहा ॥

त्राहि त्राहि दुख हारिणी, हरो बेगि सब त्रास।
जयति जयति जय लक्ष्मी, करो दुश्मन का नाश।।
रामदास धरि ध्यान नित, बिनय करत कर जोर।
मातु लक्ष्मी दास पै, करल दया की कोर।।